



Original Article

21 वीं सदी के हिंदी साहित्य और सिनेमा में चित्रित शैक्षिक समस्याएं

वैशाली राजेंद्र मोहिते

शोधार्थी

हिंदी विभाग, आबासाहेब गरवारे कॉलेज, पुणे

Manuscript ID:

IJAAR-C130356

ISSN: 2347-7075

Impact Factor – 8.141

Volume - 13

Issue - 3

January – February 2026

Pp. 283 - 287

Submitted: 03 Feb. 2026

Revised: 11 Feb. 2026

Accepted: 15 Feb. 2026

Published: 28 Feb. 2026

Corresponding Author:

वैशाली राजेंद्र मोहिते

Quick Response Code:



Website: <https://ijaar.co.in/>



DOI: 10.5281/zenodo.22786665

DOI Link:

<https://doi.org/10.5281/zenodo.22786665>



Creative Commons



सार:

आजादी के इतने वर्षों बाद आज भी हमारी शिक्षा प्रणाली उस शिखर को नहीं छू सकी, जिस अतीत को देखकर हम गौरवान्वित महसूस करते रहे हैं। साथ ही भारत के जिस शैक्षणिक स्वर्णिम इतिहास पर हम खड़े हैं, उसके भविष्य की चिंता की रेखाएं क्यों उठ खड़ी हो रही है? लाजमी हो जाता है कि इसके लिए हमें सामाजिक व्यवस्था के साथ शैक्षिक जीवन कि वर्तमान स्थिति को टटोलते हुए, मौजूदा दौर में यह राह निकलेगी कैसे? इन्ही सवालों कि चिन्हांकन महत्वपूर्ण जाता है, वर्तमान समय में वो छात्र जो स्वयं ही भटकाव असंतोष शिक्षा के मूल्यों के प्रति गैर जिम्मेदार रवैया अख्तियार किए हुए है? या फिर वे संस्थाएं जो छात्रों के भविष्य निर्माण का भार अपने ऊपर लादे हुए है? जिन शिक्षण संस्थाओं, विश्वविद्यालयों, महाविद्यालयों पर जिम्मेदारी हैं क्या वे इसके लिए तैयार है? या नहीं, इन्हीं प्रश्नों का संदर्भित साहित्य में छात्रों के शैक्षिक जीवन की तलाश महत्वपूर्ण हो जाती है।

मुख्य शब्द: हिंदी साहित्य, हिंदी सिनेमा, शिक्षा, शिक्षक, महाविद्यालय, विश्वविद्यालय, छात्र-जीवन, छात्र-आंदोलन, छात्र-राजनीति, शैक्षिक वातावरण, समस्याएं।

Creative Commons (CC BY-NC-SA 4.0)

This is an open access journal, and articles are distributed under the terms of the Creative Commons Attribution-NonCommercial-ShareAlike 4.0 International License (CC BY-NC-SA 4.0), which permits others to remix, adapt, and build upon the work non-commercially, provided that appropriate credit is given and that any new creations are licensed under identical terms.

How to cite this article:

वैशाली राजेंद्र मोहिते. (2026). 21 वीं सदी के हिंदी साहित्य और सिनेमा में चित्रित शैक्षिक समस्याएं. *International Journal of Advance and Applied Research*, 13(3), 283 - 287. <https://doi.org/10.5281/zenodo.22786665>

प्रस्तावना:

21वीं सदी की शिक्षा प्रणाली में तकनीकी विकास, कौशल आधारित शिक्षा की कमी, रटने की प्रवृत्ति और डिजिटल अंतर प्रमुख चुनौतियाँ हैं। पारंपरिक शिक्षण विधियाँ आधुनिक ज्ञान की आवश्यकताओं के अनुरूप नहीं हैं, जिससे

व्यावहारिक कौशल की कमी और ग्रामीण-शहरी शिक्षा में भारी असमानता देखने को मिलती है।

हिंदी साहित्य वैश्वीकरण, बाजारीकरण, और तकनीकी विकास के दौर में मनुष्य की बदलती संवेदनाओं, उपेक्षितों (बाल, वृद्ध, नारी, किन्नर, दलित, आदिवासी) की



अस्मिता, शैक्षिक समस्याओं महानगरीय अकेलापन, नैतिक पतन, और आर्थिक असमानता की समस्याओं को प्रमुखता से चित्रित करता है। यह साहित्य रिश्तों में दरार, उपभोक्तावाद, किसान आत्महत्या और नारी सशक्तिकरण की चुनौतियों को यथार्थवादी ढंग से प्रस्तुत करता है।

उद्देश्य:

1. आधुनिक भारतीय संस्कृति तथा सभ्यता के दर्शन को उजागर करना।
2. हिंदी साहित्य और सिनेमा में भारतीय संवेदनाओं को खोजना।
3. 21 सी सदी में आधुनिक शैक्षिक समस्याओं को उजागर करना।
4. 21 सी सदी में उपस्थित सामाजिक एवं सांस्कृतिक धरातल को पहचानना।
5. 21 सी सदी में भारतीय शिक्षा पद्धति को उजागर करना।

21 वीं सदी के हिंदी साहित्य में प्रमुख चित्रित समस्याएं:

1. **किन्नर विमर्श और अस्मिता का संकट:** साहित्य में किन्नर समुदाय के उपेक्षित जीवन, अपमान, शोषण और उनके सामाजिक सम्मान की समस्या को विशेष स्थान दिया गया है।
2. **वैश्वीकरण और उपभोक्तावाद का प्रभाव:** बाजारीकरण के कारण मानवीय संबंधों में गिरावट, रिश्तों का यांत्रिक होना, दिखावे की प्रवृत्ति और नैतिक मूल्यों का हास।
3. **महानगरीय अकेलापन और अलगाव:** शहरी जीवन की भागदौड़ में अकेलेपन की पीड़ा, रिश्तों की जटिलता, और मानसिक तनाव।

4. **हार्शिए के समाज की आवाज (दलित, आदिवासी, किसान):** किसानों की आत्महत्या, आर्थिक उदारीकरण के दुष्परिणाम, और सामाजिक व आर्थिक असमानता का चित्रण।

5. **स्त्री और युवा संवेदना:** नारी मुक्ति की छटपटाहट, पितृसत्तात्मक मानसिकता से संघर्ष, और युवाओं में बेरोजगारी के कारण पैदा कुंठा।

6. **राजनैतिक और सामाजिक यथार्थ:** लोकतंत्र का धूमिल चित्र, मीडिया का नैतिक पतन, और राजनीतिक एकाधिपत्य से उत्पन्न समस्याएं।

7. शैक्षिक समस्याएं:

- i. कौशल आधारित शिक्षा का अभाव: आधुनिक उद्योग की मांगों के अनुसार व्यावहारिक और रचनात्मक कौशल की कमी है, जिससे स्नातक बेरोजगार रह जाते हैं।
- ii. डिजिटल डिवाइड (डिजिटल अंतर): ग्रामीण और कम आय वाले क्षेत्रों में इंटरनेट, कंप्यूटर और बिजली की कमी के कारण ई-लर्निंग में बाधा आ रही है।
- iii. पाठ्यक्रम और मूल्यांकन: शिक्षा प्रणाली आज भी रटने पर केंद्रित है, न कि आलोचनात्मक सोच या समस्या-समाधान क्षमता पर।
- iv. शिक्षकों का प्रशिक्षण: पुरानी शिक्षण विधियाँ और आधुनिक तकनीकों को अपनाने में शिक्षकों के कौशल विकास की कमी।
- v. बदतर अवसंरचना: कई विद्यालयों में स्वच्छ पेयजल, शौचालय, पुस्तकालय, खेल के मैदान और फर्नीचर की कमी है।
- vi. प्रशिक्षित शिक्षकों का अभाव: योग्य शिक्षकों की कमी और शिक्षक-छात्र अनुपात का असंगत होना, जिससे व्यक्तिगत ध्यान नहीं दिया जाता।



- vii. अकादमिक और तकनीकी कमी: पुरानी पाठ्यचर्या का उपयोग, तकनीकी (कंप्यूटर/इंटरनेट) शिक्षा की कमी, और रटने पर जोर।
- viii. अपर्याप्त वित्तपोषण: फंड की कमी के कारण बुनियादी सुविधाओं का विकास और रखरखाव सही से नहीं होता।
- ix. जवाबदेही और प्रबंधन की कमी: प्रशासन और शिक्षकों में जिम्मेदारी की कमी, जिससे शिक्षा की गुणवत्ता खराब होती है।
- x. सामाजिक-आर्थिक असमानता: हाशिए पर पड़े परिवारों के बच्चे अक्सर संसाधनों के अभाव के कारण पिछड़ जाते हैं।
- xi. दलित: दलितों के प्रतिनिधित्व, उनके सामाजिक संघर्ष, जातिगत भेदभाव और रूढ़िवादी चित्रण पर आधारित है। यह पुस्तक भारतीय फिल्मों में दलित जीवन की अभिव्यक्ति, उपेक्षा और ऐतिहासिक विश्लेषण की पड़ताल करती है।
- xii. दलितों का रूढ़िवादी चित्रण: यह पुस्तक विश्लेषण करती है कि कैसे शुरुआती हिंदी सिनेमा में दलितों को अक्सर शोषित, असहाय और हाशिए पर रहने वाले चरित्रों के रूप में रूढ़िवादी तरीके से दिखाया गया।

चुनौतियाँ और उनके समाधान:

1. **सीखने में विकार:** अक्षरों या अंकों को समझने में असमर्थता, जो विशेष ध्यान से ठीक हो सकती है।
2. **जल्दबाजी में निष्कर्ष:** समस्या को समझे बिना ही समाधान खोजना, जो सीखने की प्रक्रिया में बाधक है।
3. **संसाधन और मार्गदर्शन का अभाव :** सही मेंटर या सहयोग न मिलने पर प्रतिभा का दब जाना।

उपन्यास 'डार्क हॉर्स':

नीलोत्पल मृणाल की उपन्यास 'डार्क हॉर्स' एक ऐसी उपन्यास है जो छात्रों के अनगिनत अनकही कहानियों का दस्तावेज है। जो एक तरफ सफलता की गुंजाइश करते हुए सिविल सर्विस को पैमाना मानता है और दूसरी तरफ बी.ए., एम. ए., पी. एचडी आदि डिग्री हासिल करने के बाद भी एक अदद नौकरी न मिलने पर शिक्षा व्यवस्था पर सवाल खड़ा करता है।

जिंदगी आदमी को दौड़ने के लिए कई रास्ते देती है। जरूरी नहीं की सब एक ही रास्ते से चल जाए। उनमें से एक रास्ता पकड़ लो और दूर तक दौड़िए। रुको मत, आप सफलता के दौर पूरा करेंगे। हम सब के अंदर एक डार्क हॉर्स है। जरूरत है उसे दौड़ने की जीजीविषा की।

'डार्क हॉर्स' में शैक्षिक समस्या:

उपन्यास में 'डिमरी' नामक छोटे से ग्राम का चित्रण किया है। वहां शिक्षा की कोई व्यवस्था नहीं है। पढ़ने के लिए गांव से 40 किलोमीटर दूर जाने की आवश्यकता है। गांव में अंग्रेजी शिक्षा नहीं होने के कारण हिंदी माध्यम की शिक्षा दी जाती है।

उपन्यास में आय.ए.एस. करने वाले छात्रों की दशा और दिशा का भी यथार्थ चित्रण किया है। दिल्ली के मुखर्जी नगर में इस की गारंटी देने वाले कोचिंग क्लास की तो भरमार है। परंतु रिजल्ट की गारंटी सब देते हैं लेकिन आय.ए.एस. सभी का क्रेक तो नहीं होता। सारा इलाका होर्डिंग और विज्ञापन से भरा रहता है।

दिल्ली में रहना है तो खाना, पीना, रहना और कोचिंग के लिए बहुत सारा पैसा लगता है और बहुत सारे छात्रों को आर्थिक समस्याओं से त्रस्त रहना पड़ता है। किसी को जमीन बेचनी पड़ती है। फिर भी असफल होने के बाद अंधविश्वास से



गिरे रहते हैं यह छात्र। नीलोत्पल मृणाल का यह उपन्यास युवाओं की आंतरगाथा है, पारिवारिक और सामाजिक दबावों में जीता युवा के का चित्रण किया है। नौकरी के लिए कुछ भी करने वाला युवा यहां दिखाई देता है।

शैक्षिक समस्या के साथ पारिवारिक समस्या, अंधविश्वास, भाषा माध्यम, रिश्तेदार, खान, पान, रहना, आर्थिक, सांस्कृतिक, प्रॉपर्टी डीलर, दुर्गंधी आदि समस्याओं को उजागर किया है। मनोरंजन के साथ मानवीय जीवन के जगत का अस्तित्व का बोध कराने का उद्देश्य सफल हुआ है।

शैक्षिक समस्याओं पर आधारित 3 मुख्य कहानियाँ:

1. माया की कहानी (सरकारी स्कूल से सफलता तक):

यह कहानी पाँचवीं कक्षा तक नाम न लिख पाने वाली माया के संघर्ष को दर्शाती है, जो अंततः सहयोग, सही मार्गदर्शन और आत्मविश्वास से चुनौतियों को पार कर आत्मनिर्भर बनती है। यह कहानी शैक्षिक बाधाओं को दृढ़ता से दूर करने का संदेश देती है।

2. कछुआ और खरगोश (आत्मविश्वास बनाम अहंकार):

यह प्रसिद्ध कहानी शिक्षा में निरंतरता और कड़ी मेहनत के महत्व को दर्शाती है। खरगोश (अहंकार) की तुलना में कछुआ (दृढ़ता) की जीत यह सिखाती है कि शैक्षणिक सफलता रातों-रात नहीं, बल्कि लगातार प्रयास से मिलती है।

3. मेहनत का फल (टिड्डा और चींटी): यह कहानी शैक्षिक योजना और समय प्रबंधन को सिखाती है। पूरी गर्मी काम करने वाली चींटी का उदाहरण यह सिखाता है कि भविष्य की परीक्षा या लक्ष्यों के लिए आज से ही मेहनत करना जरूरी है।

नाटक नागपाश':

सुशील कुमार सिंह कृत नागपाश राजनीतिक व्यंग्य नाटक आपातकालीन स्थितियों की भयानक तस्वीर पेश करता

है। यह नाटक परंपरागत नाटकों से भिन्न सत्ता में रहकर इसका दुरुपयोग करने वाले के खिलाफ यह एक जोरदार आवाज है।

राजनीतिक नेता युवाओं को पाठशालाएं तथा विद्यालय को आग लगाने का आदेश देते हैं। ताकि सामान्य जनता का आंदोलन की तीव्रता कम हो जाए। शासकीय मालमात्ता को नुकसान पहुंचाना चाहते हैं, छात्रों को गलत दिशा देते हैं। छात्र विद्यालय में जाकर शिक्षा लेने के बजाय राजनीति यो नेता के पीछे-पीछे चले जाएं यह उनका उद्देश्य है। शिक्षित होकर समझदार छात्र राजनेता को विरोध करें यह उन्हें मंजूर नहीं है।

नागपाश में मुट्ठी भर लोगों को निर्वस्त्र करता है, जिन्होंने अपनी निजी सार्थकों की रक्षा के लिए सारे राष्ट्र को एक भयानक नागपाश में जकड़ दिया था। नाटककार का प्रश्न है-

शासन बदला, सत्ता बदली, पर उनसे कोई कल्याण नहीं हुआ जनता का।

जो अब तक बैठे थे गद्दी पर, क्या उनसे भी कुछ होगा जो अब बैठे आकर?

21 वी शती की सिनेमा में चित्रित शैक्षिक समस्याएं:

21 वीं सदी के हिंदी सिनेमा ने शिक्षा प्रणाली की गंभीर समस्याओं को प्रमुखता से उजागर किया है, जिसमें रटंत विद्या (3 Idiots), सीखने की अक्षमता व विशेष आवश्यकता (Taare Zameen Par), व्यावसायिक शिक्षा का दबाव (Taare Zameen Par), ग्रामीण-शहरी शिक्षा का अंतर और शिक्षा में निजीकरण व आर्थिक असमानताएं।

हिंदी सिनेमा (बॉलीवुड) ने पारंपरिक शिक्षा प्रणाली, रटने की प्रवृत्ति, और परीक्षा के भारी दबाव जैसी शैक्षिक समस्याओं को प्रमुखता से चित्रित किया है। तारे ज़मीन पर, 3



इंडियट्स, और हिचकी जैसी फिल्मों के माध्यम से सिनेमा ने शिक्षा के व्यावसायीकरण और विद्यार्थियों की मानसिक स्थिति पर पड़ने वाले नकारात्मक प्रभावों को उजागर किया है।

21वीं सदी के सिनेमा में चित्रित प्रमुख शैक्षिक मुद्दे:

1. रटत विद्या और दबाव: फिल्मों ने इंजीनियरिंग शिक्षा में रचनात्मकता के बजाय रटने और शीर्ष स्थान पाने के दबाव को उजागर किया, जो मानसिक स्वास्थ्य को प्रभावित करता है। सीखने की अक्षमता ने डिस्लेक्सिया जैसी समस्याओं के प्रति संवेदनशीलता दिखाई और पारंपरिक शिक्षा प्रणाली में रचनात्मकता की कमी को दर्शाया। 3 इंडियट्स में मशीनी शिक्षा प्रणाली और रचनात्मकता की कमी पर व्यंग्य किया गया है, जहाँ शिक्षा ज्ञान के बजाय डिग्री पाने का साधन बन गई है।

2. व्यावसायिक शिक्षा का दबाव: फिल्मों ने यह भी दिखाया कि कैसे अभिभावक और समाज बच्चों पर इंजीनियर या डॉक्टर बनने का दबाव डालते हैं, जो उनकी प्रतिभा को मारता है।

3. शिक्षा में आर्थिक असमानता व निजीकरण: फिल्मों ने शिक्षा के व्यावसायीकरण और गरीब-अमीर के बीच की खाई को उजागर किया।

4. लैंगिक समानता व रूढ़िवादिता: फिल्मों ने यह दिखाया कि कैसे एक माँ अपनी शिक्षा पूरी करके बेटी को शिक्षित होने के लिए प्रेरित करती है, जो पितृसत्तात्मक समाज के खिलाफ है।

5. भाषा और माध्यम का मुद्दा: फिल्मों में अंग्रेजी माध्यम की शिक्षा को सफलता का पैमाना मानने वाली रूढ़िवादी सोच पर भी सवाल उठाए गए हैं।

6. परीक्षा का दबाव: तारे ज़मीन पर जैसी फिल्में यह दिखाती हैं कि कैसे शिक्षा प्रणाली बच्चों की अनूठी क्षमताओं (जैसे

डिस्लेक्सिया) को समझने के बजाय उन पर प्रदर्शन का दबाव डालती है।

7. शिक्षा का व्यावसायीकरण: आधुनिक फिल्मों में शिक्षा के नाम पर धंधा, महंगे स्कूल और मिडिल क्लास के लिए गुणवत्तापूर्ण शिक्षा की कमी को दिखाया गया है।

8. समावेशी शिक्षा की कमी: हिचकी जैसी फिल्में विशिष्ट आवश्यकताओं वाले बच्चों के लिए शिक्षा प्रणाली की संवेदनहीनता को उजागर करती हैं।

निष्कर्ष:

शैक्षिक समस्याओं (जैसे सीखने में कठिनाई, आत्मविश्वास की कमी, या संसाधनों का अभाव) पर आधारित कहानियाँ जीवन कौशल, दृढ़ता और व्यावहारिक ज्ञान सिखाती हैं। ये कहानियाँ बच्चों को चुनौतियों से डरने के बजाय उनका सामना करना और सकारात्मक दृष्टिकोण विकसित करना सिखाती हैं। यह साहित्य न केवल इन समस्याओं को उठाता है, बल्कि समाज से संवाद स्थापित कर एक 'मानववादी' दृष्टिकोण अपनाने की सलाह देता है।

संदर्भ:

1. हिंदी उपन्यासों में चित्रित शैक्षिक जीवन में छात्रों का परिदृश्य, राकेश कुमार खटीक
2. साहित्य और समाज का दस्तावेजीकरण, अपनी माटी, चित्तौड़गढ़, राजस्थान 2023
3. सिनेमा और दलित, डॉ. कुंबले अनिल कांबळे, प्रज्ञा प्रकाशन, 2017
4. नागपाश, सुशील कुमार सिंह, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली 2010
5. डार्क हॉर्स, नीलोत्पल मृणाल, हिन्द युग्म प्रकाशन, नई दिल्ली 2015
6. AI Overview